

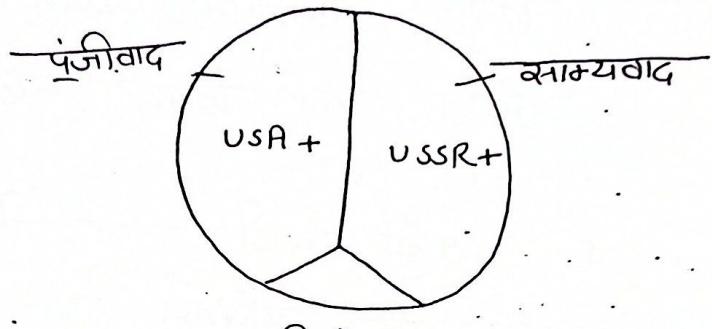
विश्व राजनीति - विश्व राजनीति एक गतिशील
संकेतों का विषय है

Key Point - 1. 19वीं सदी तक विश्व व्यवस्था
मुकाबले प्रक्रोप के इदं भिट्ठा

धर्मती है और उस दौर का सबसे लाकर्षण
विषय समाजिकादी विस्तार था यह Dependence
का फुग कहलाया।

2. 1945 के बाद वैश्विक राजनीति
में व्यापक परिवर्तन हाया एक तरफ तो विभिन्न-
निवेशीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई तो वही
दूसरी तरफ विश्व उदारवादी व समाजवादी
विचारधारा के बच्चे - की लड़ाई में उल्लंघन हुया।

यह वैश्विक फूल था मात्र 1945 के 1991 का
दौर Cold War कहलाया। और लगभग पूरे विश्व
की राजनीति अमेरिका और सोवियत संघ नामक
दो मठाशास्त्रित निर्णायित करने लगी मात्र यह दौर
जिपुरीय विश्व कहलाया।



उदारवादी व सम्यवादी विचारों का संघर्ष इस
 तक पहुँच गया कि अमेरिका र
 सोवियत कांध सर्वोच्च मानसिक बनाने की
 प्रतिस्पद्धि करने वाले और विश्वास व तकनीक
 का प्रयोग जैसे उपग्रह प्रणेपन मिशारल परमाणु
 ठार्डों का विकास आदि के विषय तानावों के
 दौर के जीन लगा वास्तविक विकास पीढ़ी
 दृष्टा गया और 1945 - 1991 का विषय
 तानावों के दौर के गुणवत्ता रहा

1945 के बाद सहियार् व जाफ़ीकी देशों
 ने दोनों गुटों के लए दृष्टा विदेशनीति
 को उपनामे दृष्टा गुटनिकेपेट को उपनामा
 और इन नवरंगतां देशों के दृष्टां विषय बहामया

3. १९९१ में जब क्षोषित वर्ष का विघ्न हो गया और विश्व व्यवस्था के तीन सुन्दर उदाहरण, निजाकरण व वैश्वाकरण लेनाप्रय होने लगा तो कुछ समय के लिए विश्व व्यवस्था को लोगोंकी स्वत्त्वादिकार प्राप्ति व्यवस्था के नाम से जाना गया। किन्तु इसकी क्षमता की ओर दौरे की समर्पणता की स्थिति विशेषतः भारत व चीन महावर्षीय शासक वर्गके उपर्युक्त है सामाजिकता। अब विश्व व्यवस्था Int'l Dependence की होच्छी है।

विश्व व्यवस्था का विषय :-

1. गुटों के समीकरण के
उन्नतव्याकृत राष्ट्रीय तथा
मंतव्याल्लीय हितों का निर्धारण
होता था इस दौर के
प्रतिव्यक्ति महत्वपूर्ण थी

१९९१ के बाद
उब नीतियों का निर्णय
गुटों व प्रतिक्षेपों के
मनुष्यार्थ न होकर वैशिख
संदर्भ में होने लगा और अब
कौतवाय्यीय संस्कार की मालवपुषि
होने लगा।

२ सम्प्रसुता की अवधारणा
 देश की सीमा रक्षण
 से संबंधित ही तथा
 इस दौर के नामिकाय
 छानियां व सेन्य शक्ति
 के जारा दबाव की
 राजनीति महात्वपूर्ण मानी
 गई।

सूचना, कानून व वैश्वीकरण
 के प्रभाव में देश की मानोलि
 सीमाओं का महत्व बहुत कह
 दिया। लेकिन इसी तथा सेन्य
 शक्ति की जगह लालिकाराव
 ने लेली उस वाह्य कुरु
 से माधिक गांतरिक कुरु
 महात्वपूर्ण हो गयी तथा Non
 state actors महात्वपूर्ण हो चुके

विदेश नात - १. किसी भी देश की विदेश
नात का सर्वेच्छ लह्य उसका
 राष्ट्रीय हित होता है अर्थात् विदेश नात
 वह नात है जिसके जारा कोई भी देश
 उपने राष्ट्रीय हितों की माधिकरण पूर्ति करना
 चाहता है

२. कार्यवाच याकू तबों को प्राप्त
 करने के लिए विदेश नात का निर्दर्शन
 किया जाता है,

1. सुरक्षा

2. विकास व जन्मयोग

3. प्रतिष्ठा

4. व्यवस्थापन

ग्रे चारों तरफ वर्गीयता क्रम के न होकर
सभी समाज का से महत्वपूर्ण है यद्यपि
परिस्थितियों के अनुसार छोटे वर्गीयता दी जा
सकती है

3. विदेश नीति के अनुकूलन का विषय
महत्व होता है अपने राष्ट्रीय हितों को प्राप्त करने
के अनुसार अपने राष्ट्रों को बढ़ावा देना भी
अपनी नीति को गतिशील बनाए रखना महत्वपूर्ण
हो जाता है।

विशेष - भारत की विदेश नीति को कुछ विवरण
माध्यमिक मानते रहे हैं कौर विषेषतः
पं. नेहरू के प्रधानमंत्रित्व काल के इसे व्याख्यायित
किया गया कौर यहाँ तक की + ७६२ के भारत

भारत चीन मुख्य में भारत की कमज़ोर स्थिति
का लोप भी नेहरू की मादशास्त्रिक नीति
पर लगा किन्तु यह नेहरू की मादशाश्वदी
नीति की नाई बलि चीन की ओर माफ़ामिल
का परिणाम हो

भारत की विदेश नीति के
गतिशीलता व परिवर्तनशीलता के तरवर स्पष्ट देखे
जा सकते हैं और अब यह मादशाश्वदी लघ्यों
को पर्याप्त वादी व व्यवठारिक दरीके से प्राप्त करने
की मोर लकड़ रही है

1990 के बाद भारत की विदेश नीति
में परिवर्तन के कारण - 1. 1990 के बाद
लगभग संपूर्ण

विष्व LPJ की तरफ आकर्षित हो रहा था
और व्यवस्थाविकास इसके सभी देशों की नीतियों
पर गंभीर प्रभाव पड़ा और आधिक वित्तीय
शक्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण हो गई और इस संदर्भ में

- a. इन परिवर्तिनों के बाद एक तरफ भारत को पंजाब, लंबनामी व उत्तरेमाला की मांवश्यकता हुई हो दृस्वरी तरफ उक्ते अपनी स्थानाधीनी को बेचने के लिए बाजार की भी जरूरत हुई और भारत LOOK East Policy का गढ़ हुई और भारत को लिए बाजार की जरूरत थी।
- Look West Policy को अपनाया और किस द्वारा - द्वितीय वर्षीय महावर्षी देशों और समूहों से संबंध बनाने लगा।
- b. आर्थिक नाइक का दृस्वरा आयाम भारत की छठती छाड़ी मांवश्यकता है जिस भारत को अंग्रेजी सुवर्णा प्राप्त करने के लिए अपनी विदेशी नीति के दायरे को बढ़ाना पड़ा और भारत मध्य स्थिरा और अंग्रेजी के देशों के की संबंध बढ़ावित करना पड़ा।
- उग्रा सुवर्णा - विदेशों के आयात कर अंग्रेजी मांवश्यकता का पूर्ण करना
- अंग्रेजी सर्वत्रता - अंग्रेजी के लिए आत्मनिर्भार रहना

Energy Security के हमें Energy Liberty
की ओर बढ़ना है।

2 1991 में USSR के पतन के बाद इतिहास
का अंतहुआ और विश्व व्यवस्था के तेजी
से परिवर्तन माया और बहली हुई परिवर्तन
के हमें रस व अमेरिका दोनों के बेहतर
संबंधों की नियमितता हुई और घोर-घोर
हम अमेरिका व पश्चिमी देशों के की संबंध
स्थापित करने लगे

3 NRI व PIO वर्तमान के विदेशनीति को
राष्ट्रकार्यालय रूप से प्रभावित कर रहे हैं
जिन देशों के भारतीय मूल के लोग बेहतर
स्थिति में हैं उनदेशों के साथ हवारे रखे
बेहतर बने और जलोगों ने एक दबाव सूखा
के रूप के संबंधित देशों को भारत से बेहतर
संबंध बनाने को प्रेरित किया।

Brain वस्तव के Brain
[पहले का Brain
Investment किए हो लग]

4 1998 में योष्टरन लिंग के बाद पहले तो प्रथा सभी महत्वपूर्ण देशों के भारत पर प्रतिक्रिया देना लेकिन भारत की बढ़ती मार्गिक चम्पिंग ने उन सभी देशों को मजबूर कर दिया कि वे सभी प्रतिक्रियों को निश्चिह्न करे क्षेत्र 2017 तक सभी महत्वपूर्ण प्रतिक्रिया होता दिया गया भारत की धर्म क्षेत्र क्षमारात्मक हुई और उसे *Defacto* परमाणु शक्ति मान दिया गया

भारत के प्रति विश्व का नज़रिया
क्षेत्र क्षमारात्मक होता गया क्षेत्र बिना [NPT] परमाणु व्यवाहर संघीय के हस्ताएँ के ही उसे 1970 का सदस्य बनाने की कोणिश की जा रही है

विशेष - भारत की विदेशनीति इस भावशिविदिता से इस परामितिकी की ओर उन्नुरब हो रही है बहुत हमारे विदेश नीति का गुणश्वर भाग र उद्देश्यों की नियंत्रता रोका रखा है

किन्तु उन्हे प्राप्त करने के तरीके पर बदला
 गया है भारत सरकार ने मपने मादरी बादी
 लघो के ट्यूगे बिना ही अनुकूलनशीलता व
 अधिकारियों को अपनाया जिसे ~~AS~~ उदाहरणों के
 समझा जा सकता है।
 उदाहरण, चीयामार में सैव्याशायन होने के कारण
 1990 के पहले साल ने चीयामार
 के बेहतर राजनीतिक व कृष्णनीतिक संबंधों को
 नई बनाया था किन्तु 1990 के काद लगे
 [Look East Policy] आवा बेहतर संबंधों की
 शुरुआत की किन्तु अपना उद्देश्य की वहाँ लेंते
 की व्यापना हो काम रखा।

- Q. भारत की विदेश नीति के संदर्भ में मान्यता का जो लगा है कि वह कपने पुकारने
 में लियो व मादरी के विस्तारित हो रही है
 किसी दूसरे उदाहरण के संदर्भ में इस कथन की
 ठिकानामक विश्लेषण करें क्या काप इस बात
 के सहमत है कि भारत की विदेश नीति पूरीतः
 बदल पुकी है,

भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों के
वायक तरफ - १. पश्चिम एशिया की लगातार
२/३ जनसंख्या, ६०% के मध्यम
GDP और औद्योगिक व्यापक यह सभी पड़ोसी
देशों की तुलना में अत्यधिक विस्तृत है इतः
भारत पड़ोसी देशों को पठ संदेह बना रहता
है कि भारत का ऐसे के देशों के साथ
सम्बन्ध का वर्णन नहीं करता बल्कि बड़े भारत
जैसे नियंत्रक की अभियानों के रहना चाहिए क्यों
Big Brother Syndrome कहते हैं और उनकी यह
मानोदशा भारतीय विदेश नीति के समूह स्वयं चुनी गई
है तुरंत है,

२. भारतीय देशों के साथ स्वयं
विशेष रूप यह की उभयता है कि पाकिस्तान व
अफगानिस्तान के अपवाद के अतिरिक्त किसी अन्य
दो देशों की सीमाओं आपस में नहीं मिलती।
३. भारतीय देशों में सामान्यतः राजनीति की
माझिर वर्षी रही और लग्जे समय तक रही
लेपातंत्रिक भावना जा विकास न हो लका।

मात्र निर्णयरत के दोहरे के बहाँ का प्रकार
की कामस्याद्यु दोहरे होते रही होते भारत
के बहुत संबंध व्यापका
हूँ।

~~Golden Crescent~~ की Golden Triangle
के बीचों - जीव . भारत की नियन्त्रित होती है भारतीय
में विवादों का कारण बनते रही उल्लेखनीय
है कि यह देश मानक प्रयोग के उत्पादन
के समय के देश है भारतीय विकास की तरफ
भारतीय द्वारा बिल्ड चुनौतिपूर्ण बनी रहती है।

4 सब सांस्कृतिक पहल भी है कि दृग्भाग सभी पड़े
देशों के भारतीय गुरु के लोग बहुत हैं ताकि
जब भी उनके माध्यिकारों का नाना होता है
तो भारत के समृद्ध उनके हितों की रक्षा करना
सब चुनावी बन जाता है किन्तु भारत की देश
के भी काम्पिए प्रोटोटो देशों को उनके नांतरीक
गामों के छलटेप दृगती है उदाहरण स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय
के रमिलों का विषय [LTTE]

विशेष - भारत की विदेश नीति के दो गुरुचय स्तंषा

पंचशील

गृहनिरपेलता

1. लक्ष्यके की प्रादेशिक संज्ञाता व करवहता
का उद्देश्य

2. आनाफ्रमान - आनाफ्रमान कामियांका व करना

3. गान्धीजी मान्यता के हस्तेष्य व करना

4. समाजता व परस्पर लाभ की नीति का पालन

5. शांतिपूर्ण सहकारिता

गुजरात डाकिन - 1990 के पहले भारत पड़ोखी

देशो के साथ अनान्यता का

व्यापक छवता वा किन्तु 1991 के बाद भारत

ने पड़ोखी देशो के साथ उदारता की नीति को

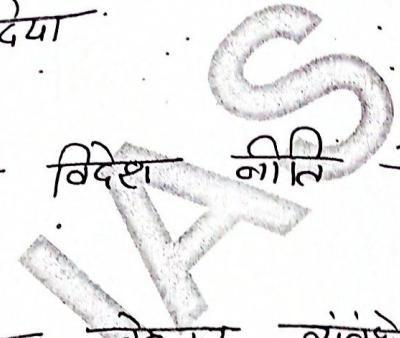
मुफ्ताया जिलों सर्वक्षेत्र उदाहरण जौनी गुजरात डाकिन

ब्यक्ति तहत पड़ोखी देशो के साथ संबंध सुधारने

के लिए लक्ष्यका निवेश किया गया मौर उनके

साथ कोन्ट्रूपूर्ण सहयोग की नीति मुफ्तायी वाई

भारत द्वारा के उत्तरी भारत के पड़ोसी देशों
के साथ बहुमत वापास को अपनाया जाएगा।
विनाशक कार्रवाई को तीन ग्रीष्म वाहियारा उपयोग
के लिए लिज पर दिया।



वर्तमान में भारत की विदेशी नीति के
समूह चुनौतिया

1. पड़ोसी देशों के साथ बहुतक संबंधों की
बहाली जिसमें पाकिस्तान की चुनौती के बारे
में छारे पड़ोसी देशों पर चीन का बड़ा
प्रभाव रहक वही चुनौती छलता जा रहा है।
2. चीन कम्बुज और क्षेत्र दोनों के चारों तरफ
से भारत को घेरने की कोशिश कर रही
चीन की मोतियों की माला नीति भारत को
कम्बुज में घेरने का एक प्रयास माना जारहा
ठिक़ रसिया की शक्ति क्षेत्र बनाने को बनार स्थ
तथा इण्डमहासागर के चीन की बढ़ती हुमें ते
क्षमित करना।
3. ऊर्जा क्षुब्धि हासिल करना एक कुमारामी रसायन

प्रधानी भारत ने परंपरागत ऊर्जा क्रोते के साथ ही नवीनकरणीय ऊर्जा क्रोते, और परंपरागत ऊर्जा क्रोते की प्राप्ति हेतु वैशिष्ट्यक बढ़ाव पर इस समझते क्रिया है। किन्तु इसके बाबजूद हमें इसे पालने का मौलिक उद्देश्य है।

4. नांत्रियिक आतंकवाद जैसे मुद्रदो पर भारत को माफ़े विद्यार्थों को वैशिष्ट्यक विश्वासित विद्यालय और साथ ही जालवायु परिवर्तन, विश्व व्यापार, सम मानकों जैसे विद्यों पर विकासशील देशों का नेतृत्व करना व्यांगी विकसित देशों माफ़े विद्यार्थों का पूर्ण मेविकासशील देशों के हितों की मानदेवता कर रहे हैं।

संयुक्तशास्त्र विद्या सुधार और विदेशी व्युवर्षा परिषद् की कुछ देशों का प्रयास करना और वैद्यायी सदस्यता छात्रियों का अधिकार करना है।

मंत्रपूर्ण - जात्यवालिया
भू-राजनीति व भू-सामारिक - किसी देश
भौगोलिक जरूरि

ना उसका राजनीति पर पड़ने वाले प्रभाव
भू-राजनीति कहा जाता है वर्तमान में किसी
देश के बिदेश नीति के संबंध में राजनीति
भृत्यवस्था, जननाकाय और का भौगोलिक जागरूक
के ननुसार अध्ययन ही भू-राजनीति कहलात
सामाज्य शब्दों में मंत्रीष्ट्रीय राजनीति पर
वाला प्रभाव ही भू-राजनीति कहलात है।

तब किसी देश की बिदेश नीति का भौगोलिक
निर्देशन सेव्य शक्ति व भू-नीति के लिए होता
हो पर भू-सामारिक कहलाती है और परन्तु
देश की सुरक्षा का जागरूक रोग होती है व
भू-सामारिक नवरिपात्र भू-राजनीति ना ही स
विशिष्ट जाग होता है।

Hard Power & Soft Power - जब कोई देश किसी
देश को व उसके र

दोचे को मुख्यतः सैनिक व लितीय शक्ति के जापान
प्रभावित करता है तो यह Hard Power Diplom

कहलाती है इस क्रठनीति के किसी देश के संबोध
करने वाले ने मजबूर किया जाता है जबकि soft
Power Diplomacy के तरह इतिहास, संस्कृति, चिकित्सा
दर्शन साड़ी के माध्यम पर किसी दूसरे देश को
बेहतर रास्तों के लिए मानित किया जाता है

- a. वर्तमान विदेशीय के विभिन्न चुनौतियों को देखते
हुए भारत को कौन सी Diplomacy को बड़ी प्रियता
देनी चाहिए Hand Power या Soft Power
- b. भारत की विदेशनीति के Soft Power Diplomacy
का महत्वपूर्ण उपकरण रही है किन्तु पिछले कोई
के विशेषता सजिकल सहायक जैसे घटना ने
पहले संकेत दिया कि नव भारत कपड़ी परंपरागत
क्रठनीति को अप्रसंगति मान चुका है।

Zero Sum Game - इस सिद्धांत के अनुसार यदि
प्रतिवधीयों के कुल लाभ को
जोड़कर उनकी कुल हानि को घटाया जाये तो उनका
परिणाम शून्य राख जायगा Zero sum game उस सिद्धांत
को बताता है जो किसी भाग लेने वाले प्रतिवधी
का लाभ, हानि किसी दूसरे प्रतिवधी के हानि, लाभ

रो पूरी तरह संतुलित हो जाती है पहले मंत्रालय
संबंधों में इस सिद्धांत को प्रमुख माना जाता है
किन्तु उत्तमान के किसी देश का दृक्षये देश
के साथ संबंध किसी मान्य देश के द्वाक्षयान
के निर्धारित नहीं होता बल्कि उसे दो देशों के
बीच सहयोग व कानूनी वित्ती के नियमित देश के साथ
देशवासी जाता है तथा प्रत्येक देश के साथ
संबंध की मापनी महत्व होती है कौर पठ किसी
मान्य देश के द्वाक्षयान के जोड़कर नहीं देरी जाती

De jure व Defacto - जब कानूनी वा कानूनी
विधि द्वारा शाखित व कानूनी
के प्रयोग के मान्यता वी जाए तो वह De jure
Power [विधित शाखित] कहलाती है जबकि कानूनी
वा कानूनी रूप के कानूनी व कानूनी कानूनी
के पास हो किन्तु जो व्यवहार के उन शाखितों
व कानूनी का प्रयोग करता है उसे Defacto Power
कहते हैं

उल्लेखनीय है कि यह शाखित व कानूनी कानूनी
की हो सकती है कौर स्थ तत्व में निहित की हो सकती है

कूटनीति - जब किसी व्यक्ति का देश के साथ
इस तरह कात रखी जाए कि गणिकता
राष्ट्रीय हितों की पुर्ति हो सके तो इसका व्यक्ति
साथ या देश की इसको करने के लिए तैयार हो।

Track - 2 Diplomacy - जब Track - 1 Diplomacy विशेषतः
पड़ोसी देशों के साथ विहंतर संबंध
बनाने के कारण बाबिल न हो सके तो Track - 2
Diplomacy महत्वपूर्ण हो जाती है सामान्य घरें में
हम इस Diplomacy के तहत सभी प्रकार की गैर-सरकारी
वार्ता को साझिल कर देते हैं जिसमें नागरिक नागरिक
संवाद, देवल, फिल्म और महत्वपूर्ण हो जाती है

Dehyphenation Policy - इस कूटनीति के तहत किसी देश के
साथ उसकी महत्वा के माधार पर
स्वतंत्र लशकों के संबंधों की स्पष्टना की जाए है इसके
प्रधानमंत्री के जनसभा पात्रा के समय में कूटनीति चर्चित
रही व्योंगी परंपरागत रूप के मारत-जरायल-फिलीटिन
दोनों को Hyphen या साथ साथ देखता था.. जिन्हें केवल
जरायल की पात्रा कर प्रधानमंत्री ने संकेत देतिया कि
भारत के लिए जरायल उक्तिनि दोनों का अपना
अलग अलग व स्वतंत्र गठन है,